खंड: 5, अंक: 12 दिसंबर 2022 DELHIN28953

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

जी20: वैश्विकता से भारतीयता की ओर

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस
वैश्विक अध्ययन केंद्र
(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)
दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

प्रो सुनील कुमार चौधरी

संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज
डॉ संध्या वर्मा
डॉ महेश कौशिक

डॉ अभिषेक नाथ
डॉ आशीष कुमार शुक्ल
राम किशोर

© सीजीएस 2022

रूपांकन: काजल व सृष्टि

संश्लेषण

जी20: वैश्विकता से भारतीयता की ओर

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. जी20 की प्रासंगिकता का एक अध्ययन – निकेश कुमार 1–4
2. जी20 समूह को सार्थक बनाने मे भारतीयता – नरेंद्र कुमार 5–7
3. जी20: भारत में शिखर सम्मेलन – आकाश 8–12
4. जी20 मे भारत की भूमिका – प्राची 13–17
5. जी20 की भारतीय अध्यक्षता: अवसर एवं चुनौतियाँ – चंद्रिका आर्य 18–22
6. भारत जी20– महिलाओं के विकास से लेकर महिलाओं के नेतृत्व में भारत के विकास की यात्रा – काजल 23–27

सम्पादकीय

किसी भी प्रकाशन व प्रकाशक की महत्वपूर्ण चुनौती नियमितता एवं निरंतरता के प्रति संकल्पित प्रबिद्धता ही नहीं होती है, अपितु गुणवता सहित प्रत्येक अंक के साथ न्यायोचितता के रुप में अकादमीय एवं प्रशासनीय स्तर पर जनमानस की मनोवृति को सकारात्मकता व सक्रियता की ओर अभिमुख करना भी होती है। अपनी इस युगल चुनौतियों से संघर्षरत अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के 53वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें एक बार पुनः हर्ष और आनंद की अनुभूति हो रही है। पाँच वर्षों की अपनी प्रकाशोय यात्रा में वैश्विक अध्ययन केंद्र से संबद्ध समस्त शोधार्थी, शिक्षार्थी एवं विद्यार्थी एक संयुक्त व संगठित परिवार के रुप में प्रकाशन के इस यज्ञ को अपनी अनवरत आहुति से साकार करते आ रहे हैं। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश शोध के प्रति वैश्विक अध्ययन केंद्र परिवार की निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा को प्रकट करने का ही प्रयास है।

वर्ष 2022 का अंतिम माह भारत को वैश्विक ख्याति की प्रमाणिकता को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के माह के रुप में जाना जायेगा। इस माह में विश्व के 20 महत्वपूर्ण राष्ट्रों के समूह व संघ ने भारत को जी20 की अध्यक्षता प्रदान की। जी20 विश्व के छः महाद्वीपों से संबद्ध 19 राष्ट्रों तथा एकल यूरोपियन यूनियन का एक ऐसा विशिष्ट अंर्तशासकीय मंच है जिसका मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीति के लिए परस्पर सदस्यों में सहयोग, समन्वय एवं सांमजस्य स्थापित करना होता है। वर्ष 1999 से संस्थापित, विकसित एवं विकासशील वृहत अर्थव्यवस्थाओं के सम्मिलन सहित विश्व की दो–तिहाई जनंसख्या एवं 75 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रतिनिधित्व करने वाला जी20 यकायक दिसम्बर 2022 में प्रख्यात हो गया, क्योंकि इसी माह भारत को एक वर्ष के लिए इसकी वैश्विक अध्यक्षता से सम्मानित किया गया।

यद्यपि प्रत्येक वर्ष जी20 की अध्यक्षता किसी न किसी राष्ट्र के पास होती है, दिसम्बर 2022 से भारत प्रदत अध्यक्षता ने वैश्विक दक्षिण के उन सभी राष्ट्रों में आशाओं एवं अपेक्षाओं की नई किरण प्रज्वलित कर दी जो भारत की अध्यक्षता द्वारा उनके हितों को वैश्विक पटल पर रख कर न्यायसंगत होते हुए देखना चाहते हैं। प्रारंभ में ही भारत ने जी20 के प्रारब्ध को प्रासंगिक कर दिया तथा वसुधैव कुटुम्बकम कथ्य से प्रेरित 'एक प्लैनेट, एक परिवार, एक प्रताप, (One Planet, One Parivar, One Prosperity) द्वारा जी20 को जन20 (People's 20) के रुप में कार्यान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित कर दिया। वैश्विक सरोकारों का भारत के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय संबोधन, समन्वय

एवं समाधान राष्ट्रों के मध्य आशा के नव न्यायोचित मानदंड किस प्रकार स्थापित कर सकेगा, आने वाला समय ही साक्षी होगा।

वैश्विक परिदृश्य की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'जी–20ः वैश्विकता से भारतीयता की ओर' विषय पर लेख आमंत्रित किये। छह उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ वैश्विक परिप्रेक्ष्य के बहुआयामी विषयों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को प्रदृशित करने का प्रयास और प्रयत्न है।

संपादक मंडल

शनिवार, 14 जनवरी 2023

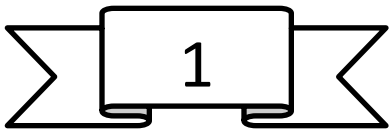

जी20 की प्रासंगिकता का एक अध्ययन

निकेश कुमार

विधार्थी, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविधालय

जब कभी भी वैश्विक संगठनों की बात आती है, तो हमारे समक्ष विभिन्न संगठनों के नाम उभर कर आते हैं। जिसमें मुख्यतः G4, G7, G8 व G20 का नाम सर्वप्रमुख आता है। इसके अतिरिक्त विश्व में विभिन्न अन्य संगठन भी है। जैसे कि ब्रिक्स, यूरोपियन यूनियन और संयुक्त राष्ट्र संघ आदि यह भी विश्व के प्रमुख राजनीतिक संगठन है। ये सभी संगठन संपूर्ण विश्व में भिन्न–भिन्न कार्यों व भिन्न–भिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बनाए गए हैं, किन्तु ऐस सभी संगठन अपने कर्तव्य और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पूर्ण रूप से उत्तरदायी नहीं है। तथापि संयुक्त राष्ट्र संघ अधिकतर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल रहा है जैसे कि अंतरराष्ट्रीय शांति बनाना, सहयोग करना और युद्धों पर विराम लगाना। परंतु जब बात वैश्विक अर्थव्यवस्था की आती है व जलवायु परिवर्तन जैसे गंभीर विषयों की होती है तो हम सभी का ध्यान G7 या G20 की ओर जाता हैं। किन्तु वर्तमान समय में जी–20 सबसे प्रसांगिक संगठन बनकर उभरा है। जी–20 का महत्व और लोकप्रियता वर्ष दर वर्ष बढ़ रहा है इसके पीछे अनेकों कारण है, जिसको समझने के लिए जी–20 को विस्तार से समझने की आवश्यकता है।

जी–20 के अंतर्गत 19 देश व एक संगठन का समूह है, जिसे हम जी–20 के नाम से जानते हैं। वर्तमान में उपस्थित जी–20 के अतिरिक्त (जी) के अन्य तीन संगठन G4, G7, और G8 है जिनका विस्तारित रूप ही उपस्थित G20 है। G20 को विस्तार से समझने से पूर्व हमें इन तीन संगठनों के बारे में भी जानना आवश्यक है। इनमें सबसे पहला है G4 जिसमें कि भारत, जापान, जर्मनी और ब्राजील सम्मिलित है। यह चारो राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता पाना चाहते हैं इसलिए इनके समूह को G4 के नाम से जाना जाता है। इसके बाद आता है G7 जो कि विश्व के 7 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश का समूह है इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील,

जापान, फ्रांस, इटली, जर्मनी और कनाडा सम्मिलित है इन 7 राष्ट्रों के समूह को G7 के नाम से जाना जाता है। बाद में इसमं रूस को भी सम्मिलित कर लिया गया। जिसके बाद इस समूह को G8 के नाम से जाना गया। किन्तु 2014 में रूस के निकलने के पश्चात् फिर G7 ही बन गया। इस G7 समूह का कार्य अंतरराष्ट्रीय तौर पर अर्थव्यवस्था की देख–रेख करना था व उसको बढ़ाना था और नियंत्रित करना था। किन्तु जब G7 समूह के सदस्य देशों को यह आभास हुआ कि यदि हमें विश्व अर्थव्यवस्था में संतुलन बनाना है तो केवल उन 7 देशों द्वारा नहीं किया जा सकता जो स्वयं से विकसित है आपितु उन देशों को भी साथ लेकर चलना पड़ेगा। जिनकी अर्थव्यवस्था उनकी तुलना में कम है अर्थात् वह अभी विकासशील हैं तथा वे निरंतर अपनी अर्थव्यवस्था में बढ़ोत्तरी कर रहे हैं जैसे कि भारत, चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे अन्य आदि देश। उन्हें इन जैसे विकासशील देशों की महत्वता के बारे में यहां के बाजार के बारे में तथा यहां के संसाधनों के बारे पता चला तो इन देशों को G7 समूह में सम्मिलित करके उसका विस्तार करने के बारे में योजनाएं बनी। इस प्रकार सन् **1999** में G7 समूह का विस्तार जी–20 समूह में कर दिया गया तथा इसमें उन देशों को भी सम्मिलित कर लिया गया जिनकी अर्थव्यवस्था बड़ी है। अतः इस प्रकार से 1999 में स्थापित G20, 20 देशों की बड़ी अर्थव्यवस्था वाला एक समूह है। जिसमें कि 19 राष्ट्र और एक संगठन सम्मिलित है। यदि इसके सदस्य देशों की बात करें तो G7 के अतिरिक्त रूस, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मेक्सिको, सऊदी अरब, दक्षिण कोरिया, तुर्की और यूरोपियन यूनियन सम्मिलित है, जिसमें कि वर्तमान में भी 27 देश हैं वर्तमान में जी–20 की प्रसंगिकता के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि विश्व के कुल अर्थव्यवस्था GDP मे 85% सहभागीदारी इसी के सदस्य देशों की है। इसके अतिरिक्त संपूर्ण विश्व व्यापार में 75% व्यापार जी–20 के सदस्य देशों के द्वारा ही किया जाता है और विश्व की कुल जनसंख्या का 60% जनसंख्या इन्हीं देशों की है। इसलिए यह राजनीतिक संगठन विश्व भर में अपनी प्रासंगिकता के लिए प्रसिद्ध है।

यदि हम जी–20 के कार्य और प्रक्रिया की बात करें तो इसका सबसे प्रमुख कार्य वैश्विक आर्थिक सहयोग प्रदान करना और आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखना है। इसके अन्य प्रमुख कार्यों में जलवायु परिवर्तन, व्यापार में बढ़ोत्तरी आदि को सुनिश्चित करना है। इन्हीं कार्यों को करने के लिए प्रत्येक वर्ष जी 20 के सभी सदस्य देशों की बैठक होतो है क्योंकि जी–20 का कोई स्थाई सचिवालय नहीं है और ना ही इसका कोई अध्यक्ष होता है। इसलिए इसकी बैठक प्रत्येक वर्ष

प्रथक–प्रथक देशों में होती है। और जो देश जिस वर्ष उसकी बैठक को आयोजित करता है। वह देश उस वर्ष के दौरान उसकी अध्यक्षता करता है। इसमें 3 देशों के समूह ट्रोइका होता है। ट्रोइका प्रत्येक वर्ष जब एक सदस्य देश अध्यक्ष पद ग्रहण करता है तो वह देश पिछले वर्ष के अध्यक्ष देश एवं अगले वर्ष के अध्यक्षता करने वाले देश के साथ समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है। इसी प्रक्रिया को ट्रोइका कहते हैं। जी–20 की बैठक में जिस वर्ष जिस देश की अध्यक्षता में जो निर्णय लिए जाते हैं, उस निर्णय को सर्वप्रथम वहीं से लागू किया जाता है। इस प्रकार G20 की बैठक में वैश्विक आर्थिक सहयोग प्रदान करने और आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए ना केवल सदस्य देशों के मध्य सहयोग किया जाता है। अपितु बैठक में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित अन्य संगठनों जैसे कि विश्व व्यापार संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन और आसियान समेत इन संगठनों के अध्यक्ष को भी बैठक में निमंत्रित किया जाता है तथा इनके साथ भी विचार–विमर्श किया जाता है। व इनकी राय भी ली जाती है, जिससे कि सहयोग किया जा सके है व आर्थिक विकास के लिए सभी निर्णय लिए जा सके। इसके अतिरिक्त जी–20 की बैठक में जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय व्यापार जैसे गहन विषयों पर भी विचार–विमर्श किया जाता है।

जी–20 के 23 वर्षों के इतिहास में पहली बार इसकी अध्यक्षता वर्ष 2023 में भारत कर रहा है। यह भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है अपनी संस्कृति व अपनी अस्मिता को संपूर्ण विश्व स्तर पर विस्तृत करने की। व अपने विकासशील देश की यात्रा को संपूर्ण विश्व को दिखाने की, कि कैसे एक गुट निरपेक्ष देश द्वितीय विश्वयुद्ध और उसके पश्चात् शीत युद्ध की छाया में रहते हुए भी अपने को निरंतर विकास के लक्ष्य की ओर अग्रसर रहा तथा विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बना। इसके अतिरिक्त कई युद्ध को झेलने के पश्चात् भी भारत परमाणु शक्ति संपन्न विश्व का चौथा शक्तिशाली देश माना जाता है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष जी 20 की अध्यक्षता के दौरान भारत की यह सबसे बड़ी चुनौती होनी चाहिए कि वह यह स्पष्ट करें कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के शेष स्थाई सदस्यों की तरह ही अब भारत भी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बनने का अधिकारी है।

इस वर्ष जी–20 की अध्यक्षता के दौरान ऐसा पहली बार होगा कि भारत में विश्व के 20 प्रमुख नेता पहली बार भारत आए। इसलिए इस अध्यक्षता से जुड़ी सभी तैयारियां करना भारत के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। जिसके लिए तैयारियां पहले से ही की जा रही है। वैसे तो यह बैठक नई दिल्ली में होनी थी, इसलिए विभिन्न सड़कों, भवनों, ऐतिहासिक स्थलों और मंदिरों का सौंदर्यकरण का कार्य किया गया। सुरक्षा से संबंधित सारी व्यवस्थाएं कर ली गई हैं। भारत ने अपनी अध्यक्षता

में होने वाली इस वर्ष की बैठक का शीर्षक "वासुदेव कुटुंबकम" दिया है जिसके द्वारा भारत संपूर्ण विश्व को एक परिवार की भांति मानता है। जिसका लक्ष्य संपूर्ण विश्व को एकतत्व में जोड़ते हुए पूर्ण विश्व को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाना है।

♦♦♦♦♦

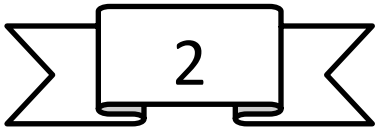

जी20 समूह को सार्थक बनाने मे भारतीयता

नरेंद्र कुमार

मोतीलाल सांध्य महाविधालय, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत के लिए जी–20 समुह का सदस्य होना और 2023 मे इसकी अध्यक्षा करना इससे विश्व मे भारत को एक उभरती हुई शक्ति के रूप मे देखा जा सकता है। भारत की विदेश नीति हमेशा शांति पूर्ण रही है। जिसे 'वसुदेव कुटुंबकम' के रूप मे पहचाना जाता है। अर्थात सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्व के रूप मे समझ सकते है। भारत ने उन सभी अंतर्राष्ट्रीय संगठनो का समर्थन किया है जो विश्व शांति और विकास मे विश्वास रखते है और अपना सहयोग दे रहे है। वर्तमान समय मे विश्व युद्ध, करोना, आर्थिक संकट, आतंकवाद, पर्यावरण इत्यादि गंभीर समस्या का सामना कर रही है। इन समस्या से निपटने मे भारत विश्व को मुख्य सार्थक शांति पूर्ण दिशा दिखा रहा है। जब जी–20 समूह की बात करते तो यह 20 प्रमुख अर्थव्यवस्था वाले देशों की सरकारों एवं केंद्रीय बैंक के अध्यक्षों (Governors) का एक समूह है। इसका अपना संविधान नहीं है। लेकिन इसकी बैठक के दौरान उस वर्ष का अपना एक मूल–विषय रहता है और यह विश्व की आर्थिक नीतियां को बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

इस समूह को विश्व के मुख्य औद्योगिक देशों (कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमेरिका, ब्रिटेन एवं जापान) ने मिलकर बनाया था ताकि वह उभरते हुए अर्थव्यवस्था वाले देशों के साथ मिलकर विश्व की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए काम कर सके। इसका प्रमुख उद्देश्य बातचीत के द्वारा अन्तराष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता को प्रोत्साहन देना है। यह ऐसे विषयों का भी समाधान करने का प्रयास करता है जो किसी संगठन द्वारा स्वयं से समाधान नहीं हो पा रहा हो। 2007–08 के वित्तीय संकट के पश्चात् G20 की महत्वता बहुत अधिक बढ़ गई है। जहां शुरू मे केवल सदस्य देशों के मंत्री और केंद्रीय बैंकों के गवर्नर ही मिलते थे। परंतु वर्ष 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के पश्चात सदस्य देशों के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति पहली बार एक साथ अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में एक साथ मिले। इस सम्मलेन के पश्चात् जी–20 समूह का अलग सम्मलेन होने

लगा। इसके पश्चात् होने वाले सम्मेलनों में उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं जैसे अर्जेंटीना, भारत, दक्षिणी अफ्रीका को भी सम्मिलित किया जाने लगा। वर्तमान में इस समूह का सम्मेलन वर्ष मे एक बार होता है। सदस्य देशों मे से किसी एक को सम्मेलन की अध्यक्षता मिलती है। इस बार यह अध्यक्षता भारत को मिली है। इस समूह के माध्यम से भारत कई महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जिसका वर्णन इस लेख मे आगे किया गया है।

विकसित और विकासशील देशों के मध्य समन्वय मे भारत की भूमिका

विकासशील देशों के हितों को वैश्विक पटल पर रखने मे भारत की विश्वसनीयता अधिक है। वर्तमान समय मे शीत युद्ध जैसी स्थिति का विश्व के लिए कोई लाभ नहीं है। जिसमे शीत युद्ध के वर्षों मे वैचारिक विरोध के कारण दोनों (अमेरिका और सोवियत संघ) एक–दूसरे पक्ष को दबाने का प्रयास कर रहे थे। उस समय भी भारत ने अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति के माध्यम से विश्व मे शांति स्थापित करने का प्रयास किया था। आज भारत का सबसे बड़ा आर्थिक साझेदार अमेरिका है। साथ ही भारत के संबंध रूस के साथ भी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहे है। यहां तक की अपने सबसे बड़े सामरिक विरोधी चीन के साथ भी भारत बड़े स्तर पर व्यापार कर रहा है। भारत जहा ब्रिक्स का सदस्य है, वही क्वाड (QUAD) का भी सदस्य है। इसके अतिरिक्त भारत संघाई कोर्पेरेशन संगठन का भी सदस्य है। जिसकी अध्यक्षा भी भारत इस वर्ष कर रहा है। भारत के पास अब इतनी समता है कि वह विकसित और विकासशील देशों के बीच समन्वय स्थापित करने मे एक सेतु का कि भाति कम कर रहा है।

जी–20 समूह मे भारत का योगदान

जी–20 समूह के माध्यम से भारत वैश्विक हितों को बढ़ाने मे सहयोग दे रहा है। इस समूह के सहयोग से हम समावेशी विकास, आर्थिक स्थिरता, सतत् विकास इसके राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते है। वर्तमान समय मे इस समूह की प्रासंगिकता इसलिए भी बढ़ जाती है, क्योंकि भारत जैसे एक विकासशील देश को इसका प्रारूप निर्धारित करने का अवसर मिला है। जिस कारण भारत वर्तमान समय मे इसका अध्यक्ष होने के नाते विकसित और विकासशील के मध्य समन्वय स्थापित कर सकता है, और विकासशील देशों के हितों को मुख्य रूप से उठा सकता है।

अतरू वर्तमान समय की स्थिति को देखते हुए कहे सकते है कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, व्यापार, वैश्विक भागेदारी, और वैश्विक समस्याओं से निपटने मे जी–20 समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए विकसित और विकासशील देशों का सहयोग आवश्यक है, और भारत इन देशों के मध्य एक सेतु का कार्य कर रहा है। जिससे कि विश्व मे शांति और खुशहाली स्थापित

की जा सके। इसमे भारत की 'सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास' की अवधारणा अति महत्वपूर्ण निभा रही है।

♦♦♦♦♦

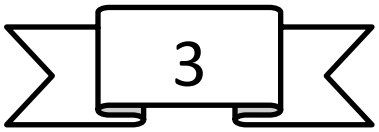

जी20: भारत में शिखर सम्मेलन

आकाश

विद्यार्थी, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सामान्यतः आजकल जहां देखो वही G–20 के अत्यधिक विचार–विमर्श हो रहे हैं, चाहे वो स्कूल हो, बस स्टैंड हो, रेलवे स्टेशन हो या मेट्रो स्टेशन हो। सभी स्थानों पर G–20 ही छाया हुआ हैं। आखिर यह है क्या G–20? क्यों यह इतना चर्चा का विषय बना हुआ है? यद्यपि भारत में G–20 विषय पर विचार–विमर्श का मुख्य कारण हाल ही में भारतीय विदश मंत्रालय द्वारा की गई घोषणा है, जिसमें मुख्यतरू कहा गया हैं कि भारत वर्ष 2023 में नई दिल्ली में G–20 समूह के नेताओं के शिखर सम्मेलन का नेतृत्व करेगा।

G–20 अर्थात् ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G20) अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्ष 2023 में प्रथमतया ऐसा होने जा रहा है कि भारत G–20 की अध्यक्षता करेगा। भारत को यह सुनहरा अवसर हाल ही में हुए G–20 के 17 वे वार्षिक शिखर सम्मेलन का नेतृत्व किया गया जिसे इंडोनेशिया की अध्यक्षता में बाली में रिकवर टुगेदर, रिकवर स्ट्रॉन्गर विषय के अंतर्गत आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत इंडोनेशिया के अध्यक्ष द्वारा यह तय किया गया कि भारत 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक भारत जी–20 की मेजबानी करेगा, अर्थात भारत के अध्यक्ष में 18वां G20 राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों का शिखर सम्मेलन 9–10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में होगा।

G–20 summit क्या है?

G–20 समूह (G–20 group) या जिसे ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (Group of Twenty) भी कहा जाता है विश्व को 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का अन्तर्राज्यीय समूह है जो की सम्बंधित देशों के वित मंत्री एवं केंद्रीय बैंकों के गवर्नर से मिलकर बना है। सरल शब्दो में कहा जाए तो G–20 समूह

विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। जिसे विश्व के आर्थिक एवं राजनीतिक विषयों पर विचार–विमर्श एवं आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है।

G–20 समूह में विश्व के 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को सम्मिलित किया गया है जिसमे संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, मैक्सिको, अर्जेंटीना, रूस, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, यूके, ब्राजील, इटली, दक्षिण अफ्रोका, कनाडा, भारत, इंडोनेशिया, जापान, तुर्की, कोरिया, फ्रांस, सऊदी अरब एवं यूरोपीय संघ (EU) को सम्मिलित किया गया है। इन देशो के द्वारा विभिन विषयों पर विचार हेतु प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली वार्षिक बैठक को ही G–20 Summit के नाम से जाना जाता है।

G–20 की स्थापनाः

G–20 की स्थापना विश्व की 20 सबसे बड़ी एवं उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को मिलाकर निर्मित की गयी है। G–20 की स्थापना का विचार 90 के दशक में प्रारंभ हुआ। जब 1990 में विभिन विकसित एवं विकासशील देश आर्थिक एवं वित्तीय रूप से विभिन समस्याओं का सामना कर रहे थे। विश्व की अर्थव्यवस्था सम्बंधित समस्याओं के समाधान के लिए 25 सितंबर 1999 को औपचारिक रूप से अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में G–20 समूह की स्थापना की गयी।

इस समूह में सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक के गवनरों को सम्मिलित किया जाता है। ळ–20 समूह द्वारा सर्वप्रथम बैठक जर्मन के बर्लिन शहर में आयोजित की गयी थी। इसके पश्चात वर्ष 2008 के वित्तीय संकट एवं विश्व की सबसे बड़ी महामंदी के पश्चात इस फोरम की मीटिंग को समिट स्तर पर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने लगा। प्रतिवर्ष इस समूह द्वारा कुछ देशो को गेस्ट कंट्री के रूप में भी G–20 समिट में आमंत्रित किया जाता है।

G–20 के सदस्यः

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G2O) में 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्किये, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं। G20 सदस्य देशों में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85%, वैश्विक व्यापार का 75% से अधिक और विश्व की लगभग दो–तिहाई जनसंख्या है।

वसुधैव कुटुम्बकम

अपने मासिक रेडियो संबोधन में मन की बात कार्यक्रम में, पीएम ने देश को इस अवसर का उपयोग करने को कहा। उन्होंने कहा हमें वैश्विक भलाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जी20 की अध्यक्षता हमारे लिए एक बड़े अवसर के रूप में आई है। हमें इस अवसर का पूरा उपयोग करना चाहिए और वैश्विक भलाई व विश्व कल्याण पर ध्यान देना चाहिए। चाहे शांति हो या एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता हो या सतत विकास, भारत के पास चुनौतियों से संबंधित समाधान हैं। हमने एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य की जो थीम दी है, वह हमारी वसुधैव कुटुम्बकम की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बीते कुछ वर्ष में इस प्रकार से भारत निरंतर वैश्विक मंचों पर सर्वोत्तम भूमिका निभा रहा है और 130 करोड़ भारतीयों की शक्ति और सामर्थ्य के साथ निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

G–20 के आमंत्रित अंतर्राष्ट्रीय संगठन

UN, IMF, विश्व बैंक, WHO, WTO, ILO, FSB, OECD, AU चेयर, NEPAD चेयर, ASEAN चेयर, ADB, ISA और CDRI हैं।

भारत की G20 प्राथमिकताएं क्या हैं?

★ हरित विकास, जलवायु वित्त और जीवन

G20 का नेतृत्व करने का अवसर ऐसे समय में आया है जब अस्तित्व पर संकट बढ़ गया है, क्योंकि COVID–19 महामारी ने जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभावों के अंतर्गत हमारी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर कर दिया है। इस संबंध में, जलवायु परिवर्तन भारत के राष्ट्रपति पद के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता है, जिसमें न केवल जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान दिया गया है, अपितु विश्व भर के विकासशील देशों के लिए सिर्फ ऊर्जा संक्रमण सुनिश्चित करना भी सम्मिलित है।

यह समझते हुए कि जलवायु परिवर्तन का विषय उद्योग, समाज और क्षेत्रों में व्याप्त है, भारत विश्व को (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) – एक व्यवहार आधारित आंदोलन प्रदान करता है जो हमारे देश की समृद्ध, प्राचीन स्थायी परंपराओं से उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है, और बारी–बारी से बाजार, पर्यावरण के प्रति जागरूक प्रथाओं को अपनाने के लिए। यह भारत के G20 विषयः वसुधैव कुटुम्बकम या वन अर्थ के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। एक परिवार एक भविष्य ।

★ त्वरित, समावेशी और लचीला विकास

स्तत् विकास के लिए एककठोर, मजबूत और समावेशी विकास एक आधारशिला है। अपने G20 प्रेसीडेंसी के दौरान, भारत का लक्ष्य उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना है जिनमें संरचनात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता है। इसमें वैश्विक व्यापार में एमएसएमई के एकीकरण में तेजी लाने, विकास के लिए व्यापार की भावना लाने, श्रम अधिकारों को बढ़ावा देने और श्रम कल्याण को सुरक्षित करने, वैश्विक कौशल अंतर को दूर करने और समावेशी कृषि मूल्य श्रृंखला और खाद्य प्रणाली आदि का निर्माण करने की महत्वाकांक्षा सामिलित है।

★ SDGs की प्रगति में तेजी

भारत की G20 अध्यक्षता 2030 एजेंडा के महत्वपूर्ण केंद्रीय बिंदु पर भी निर्भर है। ऐसे में, भारत कोविड–19 के हानिकारक प्रभाव को भी स्वीकार करता है, जिसने लिए गए कार्यों को सुधार के दशक में परिवर्तन कर दिया। इस परिप्रेक्ष्य के अनुरूप, भारत सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा में निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए G20 में अपने प्रयासों को फिर से प्रतिबद्ध करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

★ 21वीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थान

जैसा कि विश्व कई वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रही है, बहुपक्षवाद जो वैश्विक स्थिरता के लिए अब तक स्वीकृत था, उस पर अब सवाल उठने लगे हैं। ऐसे में भारत की G20 प्राथमिकता में सुधारित बहुपक्षवाद के लिए दबाव जारी रखना होगा। इसे अधिक जवाबदेह, समावेशी न्यायसंगत अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली बनाना होगा, जो 21 वीं सदी में चुनौतियों का समाधान करने के लिए उपयुक्त है।

★ महिलाओं के नेतृत्व में विकास

इस बार जी–20 की शिखर सम्मेलन में महिलाओं को भी उतना ही दर्जा दिया जाएगा जितना कि पुरुषों को दिया जाता है, अर्थात् महिलाओं के नेतृत्व में अब विकास की प्रक्रिया को चलाया जाएगा समावेशो विकास और वृद्धि के साथ महिला सशक्तिकरण और प्रतिनिधित्व भारत के G20 फोरम के विचार–विमर्श के मूल में हैं। इसमें सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स के सामाजिक–आर्थिक विकास और उपलब्धि को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को आगे लाने और अग्रणी पदों पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है। G–20 के अंतर्गत महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को भी सम्मिलित किया गया है।

★ तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना

ळ20 प्रेसीडेंसी के रूप में, भारत प्रौद्योगिकी के लिए मानव–केंद्रित दृष्टिकोण में अपने विश्वास को आगे बढ़ा सकता है, और कृषि से लेकर शिक्षा तक के क्षेत्रों में डिजिटल सार्वजनिक आधारिक संरचना, वित्तीय समावेशन और तकनीक सक्षम विकास जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अधिक से अधिक ज्ञान– साझाकरण की सुविधा प्रदान कर सकता है।

★ भारत के लिए जी–20 की प्रासंगिकता क्या है?

जी20 शिखर सम्मेलन प्रासंगिक है क्योंकि यह विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के नेताओं को एक साथ आने और महत्वपूर्ण वैश्विक विषयों को संबोधित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। और ये भारत के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत पहली बार जी–20 की इतने बड़े स्तर पर अध्यक्षता करने जा रहा है वह भी उन परिस्थितियों में जब पूरा विश्व कोविड–19 जैसी बड़ी महामारी, जिसने पूरे विश्व को की अर्थव्यवस्था को हिला कर रख दिया अर्थात् भारत के सामने अब यह सुनहरा अवसर है कि वह अपनी अच्छी नीतियों के दम पर विश्व को एक सुंदर और अत्यंत टिकाऊ विकास प्रदान करें ।

G20 देश विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का 85% और इसकी दो–तिहाई जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो इसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग और इससे जुड़े निर्णय लिए जाने का एक महत्वपूर्ण मंच बनाता है।

G20 शिखर सम्मेलन नेताओं को विचारों का आदान–प्रदान करने, नीतिगत समाधानों पर विचार–विमर्श करने और वैश्विक समुदाय की प्रमुख चुनौतियों के समाधान के प्रयासों का समन्वय करने की अवसर देता है। ये चुनौतियाँ आर्थिक विषयों जैसे मंदी, व्यापार और निवेश से लेकर निर्धनता, असमानता और जलवायु परिवर्तन जैसे सामाजिक विषयों हो सकती हैं परंतु अभी का सबसे अत्यंत संकटकारी विषय कोविड–19 रहा है। जिसको लेकर भारत समेत पूरा विश्व चिंतित है जो G20 का प्रमुख विषय बना हुआ है।

अंत में जी20 शिखर सम्मेलन अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह विश्व सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के नेताओं को महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने और समाधान खोजने की दिशा में काम करने के लिए एक साथ लाता है। इसका महत्व अंतरराष्ट्रीय सहयोग और निर्णय लेने की सुविधा और सामूहिक कार्रवाई को चलाने और सभी के लिए उत्तम भविष्य बनाने की क्षमता में निहित है।

♦♦♦♦♦

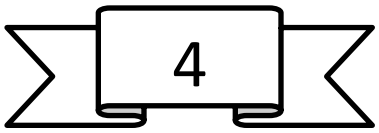

जी20 मे भारत की भूमिका

प्राची

विद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

जी– 20 एक अंतर सरकारी संस्था है जिसे 20 देशों के समूह के नाम से भी जाना जाता है। इसमें 19 देश व एक य्रोपीय संघ नामक संगठन सम्मिलित है। इसकी स्थापना 26 सिंतबर 1999 को की गई थी। इसमें केवल विकसित अर्थव्यवस्थाओं का ही प्रतिनिधित नहीं है, अपितु नए उभरते हुए राष्ट्र – राज्य को भी स्थान दिया गया है। इसका मुख्य कार्य विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए विषयों का व्याख्यान करना है। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को एक साथ एक साझा मंच प्रदान करना है। जिससे विभिन्न साझा विषयों जैसे विकास, वित्तीय संतुलन व संतुलित अर्थव्यवस्था, जलवायु संकट, सुरक्षा, धारणीय विकास और वैश्विक शांति आदि पर विचार–विमश किया जा सके और आम सहमति बन सके तथा इनका समाधान खोजा जा सकें।

जी–20 मे औद्योगिक और वृहत् रूप से उभरते हुए राष्ट्र–राज्य को उचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसके सदस्य देशों का संपूर्ण वैश्विक उत्पादन में तीन चौथाई से अधिक, विश्व व्यापार में लगभग तीन चौथाई, दो तिहाई वैश्विक जनसंख्या तथा लगभग 60 प्रतिशत विश्व के कुल भूखंड मे योगदान है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, ब्राजील, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, भारत, यूरोपीय संघ आदि इसके सदस्य देश है।

इस संगठन में कोई विशेष या स्थायी मेजबान देश नहीं है। प्रतिवर्ष मजबान देश परिवर्तित होता है। इसकी अध्यक्षता मेजबान देश के प्रमुख द्वारा की जाती है। पिछले वर्ष इसकी अध्यक्षता इंडोनेशिया के पास थी और यहाँ के प्रमुख द्वारा

अध्यक्षता की गई। किन्तु हाल ही मे भारत को इसकी अध्यक्षता मिली है और भारत के प्रधानमंत्री श्रीमान नरेद्र मादी 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक इसके अध्यक्ष के रुप में कार्य करेंगे। यह इस समूह का 18वां सम्मेलन होगा जिसका आयोजन भारत में होगा। जी– 20 के माध्यम से पहले केवल समष्टि अर्थशास्त्र और विकास जैसे विषयों से निपटा जाता था परंतु वैश्वीकरण के प्रसार के पश्चात यह विभिन्न विश्वव्यापी समस्याओं पर भी ध्यान देना अग्रसित हुआ है।

"भारत की जी– 20 अध्यक्षता एकता की एक सार्वभौमिक भावना को बढ़ावा देने के लिए काम करेगी। इसलिए भारत की थीम है– "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

भारत की अध्यक्षता मे इसका प्रतीक चिह्न विभिन्न रंगों जैसे नारंगी, सफेद, हरा और नीले से परिपूर्ण है। इसमें नीला ग्रह पृथ्वी और भारत के राष्ट्रीय फूल कमल को भी उचित स्थान दिया गया है। यह विपरीत परिस्थितियों में भी अर्थव्यवस्था के उद्भव को दर्शाता है। साथ ही में भारत के पौराणिक विरासत, आस्था, बौद्धिकता और देव सांस्कारिक क्रियायों में कमल का विशेष स्थान है।

भारत वह राष्ट्र है जो लोकतंत्र और वैश्विक बहुआयाम के लिए अत्यंत समर्पित है। भारत की जी–20 अध्यक्षता उसके महान इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण या मोड़ होगा क्योंकि यह कल्याण, सुरक्षा, समृद्धि, सभी की खुशी अर्थात् वासुदेव कुटुबंकम या 'पूरा संसार एक परिवार हैश की सच्ची आत्मीयता के लिए यथार्थवादी और वास्तविक वैश्विक समाधान खोजने के द्वारा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहता है।

जी–20 की थीम अर्थात मुख्य विषय को महाउपनिषद से अगसित किया है। यह सभी के जीवन मूल्य और अंतरसंबद्धता पर प्रकाश डालता है जिसमे मनुष्यों के साथ–साथ सभी जीव जंतुओं और सूक्ष्म जीवों को भी संमलित करता है। इसमें Lifestyle for Environment Sustainable Environment

Development and Responsible Choice पर विशेष ध्यान दिया गया है, जो यह दर्शाता है कि विकास के दौरान हमे पर्यावरण का ध्यान रखाना चाहिए। अन्य शब्दों में विकास जरूरी है साथ में पर्यावरण भी आवश्यक है इसे नजरंदाज नहीं किया जा सकता है ।

भारत की अध्यक्षता के अंतर्गत विभिन्न विश्वव्यापी समस्याओं, विषयों व चिंताओं जैसे पर्यावरण, हरित विकास, बहुध्रुवीय विश्व, समावेशी या समग्र विकास, तकनीकी व प्रौद्योगिकीय क्रांति, सतत् लक्ष्यों पर और महिला विकास आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा। साथ में पर्यावरण से संबंधित शून्य कार्बन उत्सर्जन और p3 फॉर्मला (Polluter Pays Principle) व संरक्षण में महिलाओं की भूमिका पर विशेष ध्यान देंगे।

Ministry of External Affairs

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G-20 and India's Presidency
G-20 Development Working Group (DWG) meeting to be held in Mumbai from December 13 – 16, 2022

India will host over 200 meetings in over 50 cities across 32 different work streams

G20 delegates and guests to get a glimpse of India's rich cultural heritage and a year-long India experience

The theme of India's G20 Presidency "Vasudhaiva Kutumbakam" or "One Earth · One Family · One Future" closely ties with LiFE (Lifestyle for Environment)

Posted On: 10 DEC 2022 7:10PM by PIB Mumbai

: Mumbai, December 9, 2022

वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी के अनुसार, यह अवधि भारत के लिए एक शुभ अवसर है जिसमें भारत विभिन्न विषयों विशेषकर महिला सशक्तीकरण, लोकतंत्र व डिजिटल तकनीक आदि में अपनी

विशेषज्ञता को अन्य देशों से साझा किया जा सकता है। भारत लोकतंत्र के सिद्धांत को संस्कृति की भांति व्यापक करना चाहता है। भारत सदैव शांति, बातचीत व कूटनीति के सिद्धांत का पालन करता है। यह सिद्धांत एक ऐसा मार्ग प्रशस्त करता है, जिससे किसी भी समस्या, विवाद या संघष को सुलझाया जा सकता है। इसके माध्यम से भारत वैश्विक सामान्य वस्तु के सिद्धात को प्रसारित करना चाहता है और वैश्वीकरण की प्रक्रिया से जनित नई चुनौतियों जैसे जलवायु परिवर्तन, नई उभरती हुई प्रौद्योगिकी, खाद्य सुरक्षा, आंतकवाद, कुपोंषण व अतिपोषण, शरणार्थी व प्रवास आदि का उचित व स्थायी समाधान खोजने का प्रयास किया जाएगा।

जी–20 की अध्यक्षता के दौरान भारत, इंडोनेशिया और ब्राजील मिलकर एक त्रिपक्षीय गठबंधन किया जाएगा। इसमें विकासशील अर्थात् उभरते हुई और आने वाली अर्थव्यवस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान होगा। भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था में इसकी बैठक इसका सजीव प्रमाण प्रक्षेपित करती है। इस कारण उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया व अपनी माँग व चर्चाओं में अपना भिन्न दृष्टिकोण को शक्तिशाली मंच पर रखने का उचित विकल्प मिलेगा इससे विश्व में शक्ति संतुलन को भी बढ़ावा मिलेगा।

इसके माध्यम से भारत विभिन समस्याओं जैसे कृषि और खाद्य सहायिकी तथा विभिन परिमाणात्मक और गुणवत्तापूर्ण अवरोधो को सुलझा सकता है। इन्हें प्रायः विकसित देशो द्वारा अल्पविकसित देशों पर लगाया जाता है ।

इंडोनेशिया की पूर्व अध्यक्षता के दौरान स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा व वैश्विक अर्थव्यवस्था पर ध्यान, तकनीकी नवीनीकरण, डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता तथा रूस यूक्रेन युद्ध आदि विषयों को संबोधित किया।

जी–20 समूह के द्वारा मंदी, महामारी, आंतरिक व बाह्य संघर्ष, अस्थिर राजनीतिक व्यवस्था, उच्च मुद्रास्फीति, आक्रमण के प्रभाव एवं परिवर्तित विदेश नीतियाँ जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

निष्कर्षतः जी– 20 के गठन का मुख्य उद्देश्य समावेशी वैश्विक विकास को बढ़ावा देना और विकास करना है, परंतु पर्यावरण की उपेक्षा किए बिना। यह वैश्वीकरण, निजीकरण व उदारीकरण के इस दौर में विभिन्न देशों को एक साथ लाने और एक साथ बात करने और सामूहिक रूप से समाधान ढूढ़नें के लिए एक साझा मंच व मार्ग प्रशस्त काता है ।

आइए हम भारत के जी– 20 अध्यक्षता को उपचार, सद्भाव, और आशा की अध्यक्षता बनाने के लिए एक साथ सम्मिलित हो। आइए हम मानव केंद्रित वैश्वीकरण के आदर्श प्रतिमान को आकार देने के लिए मिलकर काम करें।– प्रधानमंत्री मोदी

♦♦♦♦♦

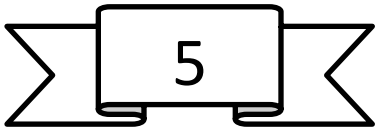

जी20 की भारतीय अध्यक्षताः अवसर एवं चुनौतियाँ

चंद्रिका आर्य

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

G20 क्या है?

1990 के दशक के अंत में वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में दक्षिण पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में बहने वाले वित्तीय संकट के मद्देनजर G20 को 2007 में राज्य और सरकारों के प्रमुखों को शामिल करने के लिए अपग्रेड किया गया था। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान और उसके बाद, G20 के समन्वित प्रयासों ने घबराहट को कम करने और आर्थिक विकास को बहाल करने में सहायता की।

इस समूह में महाद्वीपों और यूरोपीय संघ के 19 देश सम्मिलित हैं, जो विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85ः प्रतिनिधित्व करते हैं। G20 संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक और IMF जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के अतिरिक्त बांग्लादेश, सिंगापुर, स्पेन और नाइजीरिया सहित गैर–सदस्य देशों को भी आमंत्रित करता है।

G20 प्रेसीडेंसी क्या है?

G20 के पास स्थायी सचिवालय नहीं है, और समूह के एजेंडे को चलाने के लिए प्रत्येक वर्ष एक सदस्य राष्ट्रपति पद संभालता है जो दो ट्रैक में विभाजित होता है– एक वित्त मंत्रियों के नेतृत्व में और दूसरा सदस्य देशों के नेताओं के दूतों द्वारा।

भारत ने दिसंबर में G20 की अध्यक्षता ग्रहण की। भारत के पश्चात, ब्राजील G20 की अध्यक्षता करेगा, उसके पश्चात 2025 में दक्षिण अफ्रीका होगा।

अपने कार्यकाल के दौरान, भारत लगभग 50 शहरों में 200 से अधिक बैठकें आयोजित करेगा, जिसमें मंत्री, अधिकारी और नागरिक समाज सम्मिलित होंगे, जो सितंबर 2023 में राजधानी नई

दिल्ली में एक प्रमुख शिखर सम्मेलन तक ले जाएगा। शिखर सम्मेलन में G20 सदस्यों और आमंत्रित देशों के लगभग 30 राष्ट्राध्यक्ष और शासनाध्यक्ष भाग लेंगे।

G20 का आगामी एजेंडा क्या है?

भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने G20 के लिए देश के दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का आह्वान किया है। उन्होंने एक बयान में कहा, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और महामारियों की चुनौतियों को आपस में लड़कर नहीं, बल्कि मिलकर काम करके ही सुलझाया जा सकता है।

मोदी ने खाद्य, उर्वरक और चिकित्सा उत्पादों की वैश्विक आपूर्ति का अराज नीतिकरण करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया, ताकि भू–राजनीतिक तनाव मानवीय संकट का कारण न बनें।

उनका बयान नई दिल्ली के रुख को दर्शाता है कि फरवरी में रूसी आक्रमण के कारण यूक्रेन में संघर्ष को बातचीत और कूटनीति के माध्यम से हल किया जाना चाहिए।

भारत की अध्यक्षता के दौरान G20 में रूस की भागीदारी के बारे में पूछे जाने पर, भारतीय विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि चूंकि रूस G20 का सदस्य था, हम उनसे इस प्रक्रिया में भाग लेने की उम्मीद करेंगे। समूह को एक स्वर से बोलने की जरूरत है, विशेष रूप से महत्वपूर्ण मुद्दों पर जो विश्व को प्रभावित कर रहे हैं।

भारत की G20 अध्यक्षता के अवसर और चुनौतियाँ

पिछले महीने बाली में संपन्न हुए G20 शिखर सम्मेलन ने विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक मुद्दों पर सुनने के लिए एक मंच प्रदान किया।

G20 का मुख्य उद्देश्य हमेशा सामूहिक कार्रवाई और विश्व भर के प्रमुख विकसित देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच समावेशी सहयोग के महत्व को पहचानना रहा है। और एक प्रमुख बहुपक्षीय मंच के रूप में, यह भविष्य की वैश्विक आर्थिक वृद्धि और समृद्धि हासिल करने में एक रणनीतिक भूमिका रखता है, क्योंकि इसके सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के 85 प्रतिशत से अधिक, वैश्विक व्यापार के 75 प्रतिशत और दुनिया की दो–तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

यूक्रेन में युद्ध और इसके निहितार्थ – खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा सहित – बाली में वार्ता में विशेष रूप से उच्च स्थान पर रहे। हालाँकि, जैसा कि अपेक्षित था, इस तथ्य के बावजूद कि अधिकांश देश रूस की आक्रामकता की निंदा करते हैं, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में मौजूदा मानवीय पीड़ा और मौजूदा नाजुकताओं को बढ़ा रही है – विकास को बाधित करने, बढ़ती मुद्रास्फीति, आपूर्ति को बाधित करने के बावजूद, कोई कूटनीतिक प्रगति नहीं हुई। श्रृंखलाएं, भोजन और ऊर्जा असुरक्षा को बढ़ाना और वित्तीय स्थिरता जोखिमों को बढ़ाना।

भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से, इसका अर्थ है कि भारत रूस के साथ अपने ऐतिहासिक आर अनुकूल संबंधों का लाभ उठाने का अवसर ले सकता है, और 200 से अधिक G20 बैठकों की चर्चा और कूटनीति गोलमेज सम्मेलन में मास्को को और अलग–थलग कर सकता है। यह यूक्रेन संघर्ष को संबोधित करने के लिए अपने मंच का उपयोग कर सकता है, शांति के लिए रणनीति बना सकता है और जितना संभव हो सके सुलह की ओर अग्रसर हो सकता है। आखिरकार, G20 की विज्ञप्ति कि ष्आज का युग युद्ध का नहीं होना चाहिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के कुछ महीने पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को दिए गए संदेश को प्रतिध्वनित करता है।

और जबकि यह माना जाता है कि G20 आवश्यक रूप से सुरक्षा मुद्दों को हल करने का मंच नहीं है, यह आर्थिक सहयोग के लिए एक अग्रणी मंच के रूप में विकसित हुआ है। इस तरह के मामलों का अभी भी वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण परिणाम हैं। इसलिए, इन मुद्दों को यथासंभव संबोधित करने के लिए G20 पर निर्भर है, खासकर जब संयुक्त राष्ट्र और अन्य द्विपक्षीय हस्तक्षेप संघर्ष को कम करने में विफल रहे हैं।

यह एक और तरीका है जिसमें भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है, क्योंकि यह बाली शिखर सम्मेलन की सफलताओं और विफलताओं को प्रतिबिंबित कर सकता है और यह सीख सकता है कि इस बहुपक्षीय मंच को और अधिक प्रासंगिक कैसे बनाया जाए। और भले ही यूक्रेन संघर्ष, एक मुखर चीन के उदय के कारण बढ़ते भू–राजनीतिक तनावों के साथ मिलकर, भारत के नेतृत्व और बहुपक्षवाद के एक अन्यथा गिरावट वाले युग में G20 की विश्वसनीयता को पुनर्जीवित करने की क्षमता का परीक्षण करेगा, नई दिल्ली एक ऐसे राष्ट्रपति पद की आकांक्षा रखती है जो समावेशी, महत्वाकांक्षी, निर्णायक और क्रिया–उन्मुख होगा।

भारत G20 प्रेसीडेंसी की एक तिकड़ी के केंद्र में भी है – क्रमशः इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील– ये सभी उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं, इस प्रकार, ग्लोबल साउथ की चिंताओं को एक बहुत ही महत्वपूर्ण मोड़ पर सुनने के लिए एक बड़ी आवाज प्रदान करते हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए।

यह जलवायु परिवर्तन, व्यापार सुविधा और स्वास्थ्य देखभाल जैसे मुद्दों पर पश्चिम और वैश्विक दक्षिण के बीच की खाई को कम करने के लिए भारत के लिए एक और सहारा हो सकता है।

चाहे जलवायु वार्ता हो, विकासशील देशों के लिए तकनीकी और वित्तीय सहायता के मामले में एक उचित सौदे के लिए बातचीत करनाय विश्व व्यापार संगठन में कमजोर अर्थव्यवस्थाओं के लिए टैरिफ और गैर–टैरिफ बाधाओं को कम करने से संबंधित मुद्दों परय या विश्व स्वास्थ्य संगठन में, COVID–19 टीकों पर पेटेंट छूट के लिए, भारत ने अतीत में कम आय वाले देशों के कारण का समर्थन किया है– और अब यह फिर से ऐसा कर सकता है। इस बार, इन सरकारों को निवेश और तरलता प्रदान करने, ऋण राहत और पुनर्गठन की पेशकश करने के लिए एक सतत विकास लक्ष्य प्रोत्साहन पैकेज अपनाने की दिशा में काम कर रहा है।

इन मुद्दों को रेखांकित करते हुए, भारत ने सार्वजनिक डिजिटल सामान और डिजिटल बुनियादी ढांचे सहित क्षेत्रों में छह साझा प्राथमिकताओं की पहचान की है– जलवायु कार्रवाई, जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी सहयोग स्वच्छ, टिकाऊ और समावेशी ऊर्जा संक्रमणय सतत विकास लक्ष्यों पर त्वरित प्रगतिय महिलाओं के नेतृत्व में विकासय और बहुपक्षीय सुधार।

प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी सुझाव दिया कि विकास के लिए डेटा भारत के राष्ट्रपति पद का एक अभिन्न अंग होगा। डिजिटल परिवर्तन मानवता के एक छोटे से हिस्से तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, और इसका बड़ा लाभ तभी महसूस किया जाएगा जब डिजिटल पहुंच सही मायने में समावेशी हो जाएगी। पिछले कुछ वर्षों में भारत के अपने अनुभव ने दिखाया है कि यदि डिजिटल आर्किटेक्चर को व्यापक रूप से सुलभ बनाया जाए, तो यह सामाजिक आर्थिक परिवर्तन ला सकता है।

इस प्रकार, इसकी अध्यक्षता के तहत, भारत को पूर्व–पश्चिम संघर्ष को संबोधित करने के लिए दोनों पक्षों के पक्षपातपूर्ण दबावों पर काबू पाने के लिए एक संतुलन बनाना होगा। और इसे अपने स्वयं के सामरिक स्व–हितों के साथ–साथ वैश्विक समुदाय के केंद्रीय मुद्दों के माध्यम से सावधानी से आगे बढ़ते हुए ऐसा करना होगा, अगले साल G20 के लिए ठोस वार्ता, कार्यान्वयन और परिणाम के लिए एक आदर्श बनाना, एक नेता के शिखर सम्मेलन के साथ समापन सितंबर 2023 में नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

वसुधैव कुटुम्बकम– विश्व एक परिवार है– के नारे को अपने G20 विषय के रूप में आगे बढ़ाते हुए, भारत को आने वाले वर्ष में इस अव्यवस्थित परिवार को कुशलता से प्रबंधित करने की

आवश्यकता है। और इस नेतृत्व की भूमिका के माध्यम से, इसे समावेशी वैश्विक आर्थिक सुधार के लिए एक खाका तैयार करते हुए, एक विकासात्मक एजेंडे को प्राथमिकता देनी चाहिए।

G20 की अध्यक्षता भारत को खंडित वैश्विक व्यवस्था से निपटने में अपनी ताकत और विश्वसनीयता का परीक्षण करने का एक अभूतपूर्व अवसर देती है।

♦♦♦♦♦

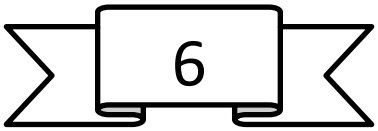

भारत जी20– महिलाओं के विकास से लेकर महिलाओं के नेतृत्व में भारत के विकास की यात्रा

काजल

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

द ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G20) एक अंतर–सरकारी मंच है जिसमें अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रुस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका आर यूरोपीय संघ सहित 19 देश सम्मिलित हैं। G20 सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के अनुमानतः 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार के 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व जनसंख्या के अनुमानतः दो–तिहाई का प्रतिनिधित्व करते हैं। वैश्विक आर्थिक और वित्तीय विषयों पर चर्चा करने के लिए वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में एशियाई वित्तीय संकट के पश्चात 1999 में G20 की स्थापना की गई। 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट के अनुसार इसे राज्य सरकार के प्रमुखों के स्तर पर बढ़ाया गया था और 2009 में, इसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए मुख्य मंच नामित किया गया था। G20 राष्ट्रों के मध्य कुछ उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं, जिनकी विवेचना प्रतिवर्ष होने वाले G20 शिखर सम्मेलन में की जाती है। जो वार्षिक प्रेसीडेंसी के अनुसार कार्य करती है। G20 प्रेसीडेंसी एक वष के लिए G20 एजेंडा चलाती है। G20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं वित्त ट्रैक और शेरपा ट्रैक। वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर वित्त ट्रैक का नेतृत्व करते हैं, जबकि शेरपा शेरपा ट्रैक का नेतृत्व करते हैं।

शेरपा की ओर से G20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है, जो नेताओं के निजी दूत होते हैं। वित्त ट्रैक का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर करते हैं। दो ट्रैक के भीतर, विषयगत रूप से उन्मुख कार्य समूह हैं

जिनमे सदस्यों के प्रासंगिक मंत्रालयों के साथ–साथ आमंत्रित अतिथि देशों और विभिन्न अंर्तराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। वित्त ट्रैक मुख्य रूप से वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में है। प्रत्येक प्रेसीडेंसी के पूरे कार्यकाल के दौरान ये कार्यकारी समूह नियमित रूप से मिलते हैं। शेरपा वर्ष के दौरान वार्ता की देखरेख करत हैं, शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करते हैं और G20 के मूल कार्य का समन्वय करते हैं।

इसके अतिरिक्त, इसमें ऐसे एंगेजमेंट ग्रुप हैं जो G20 देशों के नागरिक समाजों, सांसदों, थिंक टैंकों, महिलाओं, युवाओं, श्रम, व्यवसायों और शोधकर्ताओं को एक साथ लाते हैं। समूह के पास स्थायी सचिवालय नहीं है। प्रेसीडेंसी को ट्रोइका– पिछली और आने वाली प्रेसीडेंसी द्वारा समर्थित है। भारत की अध्यक्षता के दौरान, तिकड़ी में क्रमशः इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील सम्मिलित होंगे।

G20 सतत् विकास पर आधारित 2030 एजेंडा व योजनाएँ

G20 ने लंबे समय से माना है कि विकासशील देश, उन्नत व विकसित अर्थव्यवस्थाओं की भांति मजबूत, टिकाऊ और संतुलित विकास के व्यापक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए केंद्रित हैं। 2010 में प्रारंभ में सियोल विकास के नाम से शुरू किया गया, G20 सतत् विकास पर आधारित है, जिसने समय के साथ अपने आकार का विस्तार किया है। 2015 में सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा के विश्विक समझौते के साथ, G20 नेताओं ने अपने सदस्य देशों की सीमाओं के भीतर और बाहर वैश्विक लक्ष्यों के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाने और समर्थन करने में इस समन्वय मंच की अनूठी और महत्वपूर्ण भूमिका को निरंतर मान्यता दी है। इस सामूहिक प्रतिबद्धता को 2016 में अपनाए गए सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडे पर G20 की कार्य योजना में रेखांकित किया गया है, और ठोस कार्यों तथा वार्षिक प्रगति अपडेट के माध्यम से आगे बढ़ाया गया है।

स्तत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) और अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा (एएएए) सहित सतत् विकास के लिए 2030 एजेंडा में G20 महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपने मूल आर्थिक जनादेश से अतिरिक्त, G20 के कार्य में प्रमुख वैश्विक सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों पर कार्यवाही, वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान में योगदान और एक स्थायी वैश्विक अर्थव्यवस्था में कम आय वाले और विकाशील देशों के एकीकरण का समर्थन करना सम्मिलित है। सामूहिक

रूप से, G20 सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का अनुमानतः 85 प्रतिशत, विश्व व्यापार का 75 प्रतिशत, वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन का 80 प्रतिशत और वैश्विक प्लास्टिक उत्पादन का 70 प्रतिशत व साथ ही दो–तिहाई भाग रखते हैं।

इसके अतिरिक्त G20 के सदस्य दो–तिहाई बाहरी अंतर्राष्ट्रीय निवेश प्रवाह के लिए उत्तरदायी हैं और वैश्विक विकास सहायता के विशाल बहुमत को प्रदान करते हैं, जबकि वैश्विक प्रेषण के तीन–चौथाई के लिए स्रोत देश भी हैं। वैश्विक स्थिरता सुनिश्चित करने और लचीलेपन को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए G20 ने स्थायी आर्थिक आयामों के साथ सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों को सम्मिलित करने के लिए अपने एजेंडे को व्यापक बना दिया है दृ महामारी के प्रसार को रोकने से लेकर असमानताओं को कम करने तक के विषय इसमें सम्मिलित हैं।

G20 सतत् विकास 2030: लैंगिक समानता

स्तत् विकास 2030 एजेंडा का कार्यान्वयन न केवल एसडीजी को प्राप्त करने के अवसर प्रदान करता है अपितु लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रृंखला की प्रगति में योगदान करने के साथ–साथ बुनियादी मानवाधिकारों को प्राप्त करने का भी अवसर प्रदान करता है। G20 के सतत् विकास एजेंडा को लेकर बहुत–सी रिपोर्ट सामने आई जिन्होंने अब तक के विकास की समीक्षा की। इस लेख का उद्देश्य भी उन उद्देश्य में से किसी एक विषय पर भारत की प्रगति की समीक्षा कर है। G20 ने कार्य योजना में परिभाषित सतत् विकास क्षेत्रों (एसडीएस) में सामूहिक रूप से योगदान दिया है और G20 की वर्तमान प्राथमिकताओं में सतत् विकास के तीन आयामों– आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण पर यह भी जाँच की है कि वह कौन–से विषय हैं जो मुख्य है– लैंगिक समानता इन मुख्य विषयों में से एक है। G20 सतत् विकास 2030 के तहत कार्य स्थल पर महिला भागीदारी को बढ़ाने और लैंगिक अंतर को 25 प्रतिशत कम करने का एजेंडा निधारित किया गया है। अवैतनिक देखभाल और घरेलू काम का बोझ दुनिया के हर क्षेत्र में महिलाओं और लड़कियों पर असमान रूप से पड़ता है, जिसका अर्थ है कि वे लंबे समय तक काम करती हैं और उनके पास शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी जैसी गतिविधियों के लिए कम अवसर होते हैं। अपने वैतनिक रोजगार में वे पुरुषों से कम कमाती हैं। श्रम बल की भागीदारी पर समग्र प्रगति के अतिरिक्त G20 सदस्यों में

लैंगिक वेतन अंतर 2010 के पश्चात से लगभग 17 प्रतिशत के औसत से थोड़ा बदल गया है। इस बीच, अवैतनिक कार्य के आसपास वैश्विक असमानताओं को संबोधित करना एक सतत् समस्या बनी हुई है। विकासशील देशों में, महिलाएँ अक्सर आर्थिक क्षेत्रों में लगी रहती हैं जो बड़े पैमाने पर अनौपचारिकता में केंद्रित होती हैं और सार्वजनिक नीतियों द्वारा समर्थित नहीं होती हैं या निवेशकों के लिए अवश्य होती हैं। किंतु विशेषकर भारत के विषय में ना केवल आर्थिक स्तर पर अपितु सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर भी महिलाओं की स्थिति और भागीदारी बढ़ी है।

G20 के तहत भारत और लैंगिक समानता

भारत में महिलाएँ भारतीय इतिहास और संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं से लेकर स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष से लेकर दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था होने तक, महिलाओं ने सभी क्षमताओं में निर्णायक भूमिका निभाई है। यद्यपि अवश्य ही संख्या कम रही, जो समय के साथ बढ़ी है और वर्तमान समय में सबसे अधिक देखो गई है। 2014 के पश्चात् से भारत में महिलाओं व उनकी समस्याओं के विषय में सरकारी तंत्र में स्पष्टता से विवेचना होनी प्रारंभ हुई है। फिर चाहे वह, अनेकों नीतियों के माध्यम से हो या राजनैतिक उत्तरदायित्व सौपने के विषय में हो।

मंत्रिपरिषद में 9 महिलाओं के साथ, सुरक्षा कैबिनेट समिति में दो महिलायें (भारत के लिए पहली) जिसमें पहली पूर्णकालिक रक्षा मंत्री भी सम्मिलित हैं, इस प्रकार की पहल राजनीति में महिला नेतृत्व को बढ़ा रहा है। कई स्थान पर पहले देखा गया कि प्रशिक्षण की कमी के कारण, पंचायतों की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों (EWRs) के लिए निर्णय लेने का संचालन परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा किया जाता था। इसने पंचायत निकायों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण के उद्देश को विफल कर दिया। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने गाँवों के शासन और प्रशासन में उनकी क्षमता और कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से पंचायतों की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के लिए एक राष्ट्रव्यापी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया।

इसके अतिरिक्त बहुत से स्टार्ट–अप के सीईओ सामान्य परिवारों की महिलायें हैं, जिनमे से एक स्टार्ट–अप का नाम यूनिकॉर्न है। इसक अतिरिक्त, देश के सबसे बड़े एंजेल निवेशक क्लबों में से एक ने नोट किया है कि महिलाओं से आने वाले विचारों की संख्या जो 2014 में 10 प्रतिशत थी वह बढ़कर 2018 में 30 प्रतिशत देखी गई। वर्ष 2018 में ही, तीन महिलाओं को भारतीय वायु सेना में लड़ाकू पायलट के रूप में सम्मिलित किया गया था। प्रत्येक युवा

लड़की के लिए जिसे यह विश्वास दिलाया गया था कि उसके ऊपर लिंग आधारित बाधाएँ हैं, यह उसे हटाने का एक सफल कदम था।

भारत सरकार की नीतियों के आधार पर देखें तो मुद्रा योजना और स्टैंड अप इंडिया की संयुक्त 74 प्रतिशत लाभार्थी महिलायें हैं। ये महिला उद्यमी न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, अपितु आजीविका के अनेक अवसर उत्पन्न करके अधिक महिलाओं का समर्थन करने की मजबूत स्थिति में भी हैं। इसी के साथ, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण बहुत–सी लड़कियाँ मासिक धर्म के दौरान स्कूल छोड़ देती हैं या अनुपस्थित रहती हैं। किंतु 2014 के पश्चात से माध्यमिक विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है, जो 80-97 प्रतिशत हो गई है, जिसका मुख्य कारण विद्यालयों में शौचालयों की उपलब्धता है।

कुल मिलाकर भारत में महिलाओं की स्थिति में बीते पाँच वर्षों में वृद्धि हुई है, जो मुख्यतः भारत सरकार की विभिन्न नीतियों व पहल का परिणाम है। इन सभी प्रगतियों के आधार पर हम यह तो नहीं कह सकते कि भारत में लैंगिक असमानता नहीं है, अपितु तुलनात्मक रूप से यह बहुत कम हो गई है। भारत में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में लैंगिक अंतर में कमी हुई है।

♦♦♦♦♦

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007

www.cgs.du.ac.in @cgsofficialdu office@cgs.du.ac.in +91-11-27666281